



Gainer Academy

CLASS - 11TH

Psychology (मनोविज्ञान)

Chapter - 8

Thinking सोच

 www.gaineracademy.in

 Gainer Academy





Lesson - 8.

चिंतन

- चिंतन का स्वरूप: चिंतन सभी संज्ञानात्मक गतिविधियों या प्रक्रियाओं का आधार है तथा एकमात्र मानव जाति में ही पाया जाता है। इसमें वातावरण से प्राप्त सूचनाओं का महस्तन एवं विश्लेषण सम्मिलित है।
- चिंतन प्रायः संगठित और लक्ष्य निर्देशित होता है।
- चिंतन एक आंतरिक मानसिक प्रक्रिया है जिसका अनुमान बाह्य या प्रकट व्यवहार से लगाया जा सकता है।
- चिंतन के आधारभूत तत्व :
 - 1) मानसिक प्रतिमा
 - 2) संप्रत्यय
- चिंतन की प्रक्रिया: मानसिक प्रतिमाओं एवं संप्रत्ययों का उपयोग चिंतन के आधार के रूप में होता है।
- समस्या समाधान: समस्या समाधान ऐसा चिंतन है जो लक्ष्य निर्दिष्ट होता है। हमारे दिन-प्रतिदिन की लगभग सभी गतिविधियाँ एक लक्ष्य की ओर निर्दिष्ट होती हैं।
- समस्या समाधान में अवरोध:
 - 1) मानसिक विन्यास
 - 2) अभिप्रेरणा का अभाव



Date.....2.....

❁ तर्कना : सोच-विचार करके किसी भी घटना वस्तु का अनुमान लगाना कि वह क्यों घटित हो रही है ।

❁ निगमनात्मक तर्कना : तर्कना का वह प्रकार जो एक अभिगृह या पूर्वधारणा से प्रारंभ होता है उसे निगमनात्मक तर्कना कहते हैं ।

❁ आगमनात्मक तर्कना : वह तर्कना जो विशिष्ट तथ्यों एवं प्रेक्षणों पर आधारित होती है उसे आगमनात्मक तर्कना कहते हैं ।
आगमनात्मक तर्कना विशिष्ट प्रेक्षणों पर आधारित सामान्य निष्कर्ष निकालना है ।

❁ निर्णयन : निगमनात्मक एवं आगमनात्मक तर्कना हमें निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करते हैं ।

❁ निर्णय : निर्णय लेने में हम ज्ञान एवं उपलब्ध साक्ष्य के आधार पर निष्कर्ष निकालते हैं, धारणा बनाते हैं, घटनाओं और वस्तुओं का मूल्यांकन करते हैं ।

❁ सर्जनात्मक चिंतन का स्वरूप एवं प्रक्रिया :

• संगीत, पेंटिंग, काल्प और कला के अन्य रूप जो हमें आनंद और हर्ष प्रदान करते हैं, सभी सर्जनात्मक चिंतन के उत्पाद हैं ।

❁ साधारण सर्जनात्मकता : जो एक व्यक्ति के प्रेक्षण



Date..... 3.....

चिंतन एवं समस्या समाधान में प्रदर्शित होता है वह असाधारण सर्जनात्मक उपलब्धियों में दिखने वाली विशिष्ट प्रतिभा 'सर्जनात्मकता' से भिन्न होता है।

❁ सर्जनात्मक चिंतन का स्वरूप :

सर्जनात्मक चिंतन को नए तरीके से सोचने या भिन्न प्रकार से सोचने के रूप में समझा जाता है।

जे० पी० गिल्कर्ट : चिंतन के प्रकार →

1) अभिसारी 2) अपसारी

• अभिसारी : जिसकी आवश्यकता वैसी समस्याओं को हल करने में पड़ती है जिनका मात्र एक सही उत्तर होता है। मन सही उत्तर की ओर अभिमुख हो जाता है।

• अपसारी : अपसारी चिंतन योग्यताओं के अंतर्गत सामान्यतया चिंतन प्रवाह, लचीलापन, मौलिकता एवं विस्तारण आते हैं।

* सर्जनात्मक चिंतन की प्रक्रिया : सर्जनात्मक प्रक्रिया का प्रारंभिक बिंदु है कुछ नयी चीजों को सोचने या उत्पन्न करने की आवश्यकता जिससे प्रयास प्रारंभ होता है।

1) तैयारी

3) उद्भव

2) प्रदीप्ति

4) स्थापन ।

• सर्जनात्मक चिंतन का विकास : सर्जनात्मक चिंतन की अभिव्यक्ति एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न हो सकती है।



कौई व्यक्ति किस सीमा तक सर्जनात्मक हो सकता है इसके निश्चरण में यद्यपि आनुवंशिक कारक महत्वपूर्ण है, तथापि पर्यावरणीय कारक सर्जनात्मक चिंतन योग्यताओं के विकास को प्रोत्साहित या बाधित करते हैं।

- एक व्यक्ति के विकास एवं परिपूर्णता के लिए सर्जनात्मक चिंतन का विकास महत्वपूर्ण है।

1) सर्जनात्मक चिंतन के अवरोध :

- सर्जनात्मक चिंतन के विकास का प्रथम चरण है सर्जनात्मक अभिव्यक्ति को बाधित करने वाले अवरोधी कारकों की पहचान करना और उसके बाद उनको दूर करने का प्रयास करना।

- सर्जनात्मक चिंतन करने में अवरोध आते हैं जिन्हें आध्यात्मिक, प्रात्यक्षिक, अभिप्रेरणात्मक, संवेगात्मक एवं सांस्कृतिक वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

* सर्जनात्मक चिंतन के उपाय :

- अपने विचार के प्रवाह को बढ़ाने के लिए एक दिन दस कार्य या परिस्थिति के लिए जितना हो सके योजना, प्रतिक्रिया, समाधान अथवा शु सुझाव उत्पन्न करें।

- मुक्त परिस्थितियों में विचार के प्रवाह एवं लचीलेपन को बढ़ाने के लिए आसबर्न के विचारावेश प्रविधि का उपयोग किया जा सकता है।



Date.....5.....

चिंतन प्रवाह का अभ्यास करके लचीलापन, सहचारी चिंतन की आदत, सहलग्नता अन्वेषण कर, या भिन्न दुरस्थ विचारों को जोड़ कर विकसित किया जा सकता है।

प्रथम विचार या समाधान को कभी स्वीकान न करें।

यह सोचने का प्रयास करें कि आपकी समस्या पर कोई दूसरा व्यक्ति क्या समाधान प्रस्तुत कर सकता है।

तात्कालिक पुरस्कार तथा सकलता के लोभ का प्रतिरोध कीजिए।

कुंठा एवं असकलता से संमोजस्य स्थापित कीजिए।
आत्म - मूल्यांकन को प्रोत्साहित कीजिए।

समस्या से संबंधित स्वयं की रक्षा युक्तियों के प्रति सख्त रहें।

पूर्वोक्ति के अतिरिक्त आत्मविश्वासी तथा सकारात्मक बनें।

अपनी सर्जनात्मक क्षमता को दुर्बल न समझें।

अपने सर्जन के आनंद का अनुभव करें।

विचार एवं भाषा

भाषा विचार को निधारित करती है और विचार भाषा को तथा भाषा एवं विचार के उद्गम भिन्न-
हैं।



Date.....b.....

* विचार के निधारक के रूप में भाषा :

हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में बहुत्व संबंधों के लिए हम निम्न 2 तरह के अनेक शब्दों का उपयोग करते हैं।

* बेजामिन ली वॉर्क : का मत यह था कि भाषा विचार की अंतर्वस्तु का निधारण करती है। यह दृष्टिकोण भाषाई सापेक्षता प्राक्कल्पना के नाम से जाना जाता है।

* भाषा निधारक के रूप में विचार : जीन पियाजै

• भाषा न केवल विचार का निधारण करती है, अपितु यह इसके पहले भी उत्पन्न होती है।

• पियाजै ने प्रमाणित किया कि बच्चे संसार का आंतरिक निरूपण चिंतन के माध्यम से ही करते हैं।

• पियाजै का मानना था कि यद्यपि भाषा बच्चों को सिखाई जा सकती है, किंतु शब्दों को समझने के लिए उसके मूल में निहित संप्रत्ययों के ज्ञान (अर्थात् चिंतन) की आवश्यकता होती है। इस लिए भाषा को समझने के लिए विचार आधारभूत एवं आवश्यक तत्व है।

ॐ भाषा एवं भाषा के उपयोग का विकास :

भाषा कुछ नियमों के द्वारा संगठित प्रतीकों की एक व्यवस्था है जिसका उपयोग हम एक



Date.....7.....

इससे से संप्रेषण करने में करते हैं।

* भाषा की विशेषताएँ :

- 1) श्रुतीकी की उपस्थिति
- 2) श्रुतीकी को संगठित करने के लिए नियमों का स्वसमूह
- 3) संप्रेषण ।

* भाषा का विकास : भाषा एक जटिल व्यवस्था है जो केवल मनुष्यों में पाई जाती है।

- नवजात शिशु और छोटे बच्चे विविध प्रकार की ध्वनियाँ निकालते हैं जो धीरे-2 परिमार्जित होकर शब्द की तरह हो जाती हैं।

- व्यवहारवादी बी. स्किनर का मानना था कि हम भाषा को उसी प्रकार से सीखते हैं जैसे कि पशु कुंजी पर चाँच करना या छड़ दबाना सीखते हैं।

- व्यवहारवादियों के अनुसार भाषा का विकास अधिगम के सिद्धांतों : 1) सादृश्य 2) अनुकरण 3) पूर्वबलन पर आधारित है।

- भाषा का उपयोग : भाषा के उपयोग में संप्रेषण के सामाजिक रूप से उपयुक्त तरीकों की जानकारी रखना सम्मिलित है।

About

WELCOME TO GAINER ACADEMY

I am Pankaj Verma Welcome to Our Study Verse Learn Anything, Anywhere, Anytime. Improve your skills with our Tutorials. Unlock your potential and achieve success with us and Unleash your inner genius with our expert guidance.

We are offering a wide range of educational programs for all age groups and all standard. We have dedicated teachers for helping students to reach their full potential and also guide students of their journey to success.

we are also available on



www.gaineracademy.in



[GAINER ACADEMY](#)



gaineracademy@gmail.com



[gainer_academy](#)

